

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलाजी, सत्र 15, ईश्वर के लोग

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं जो यूहन्ना धर्मशास्त्र पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 15 है, ईश्वर के लोग।

हम यूहन्ना धर्मशास्त्र, यूहन्ना के सुसमाचार के धर्मशास्त्र में अपना अध्ययन जारी रखते हैं, और आइए प्रभु की खोज करें।

पिता, आपके वचन के लिए धन्यवाद। अनंत युगों से पहले मसीह यीशु में हमें अनुग्रह देने के लिए धन्यवाद। अपने बेटे को हमारा उद्धारकर्ता बनने के लिए भेजने और हमारे दिलों में अपनी आत्मा के लिए धन्यवाद। हमें आशीर्वाद दें, हमें प्रोत्साहित करें, हमें सुधारें जहाँ हमें इसकी ज़रूरत है। हमें अपने मार्ग पर ले चलें, हम यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं, आमीन।

हमने यूहन्ना की शैली, चौथे सुसमाचार की संरचना, उसके उद्देश्य, मैं हूँ कथन, संकेत, समय कथन, यीशु के प्रति प्रतिक्रियाएँ, यीशु के गवाह, यीशु के चित्र, और फिर उसके उद्धारक कार्य, पवित्र आत्मा के चित्र का अध्ययन किया है, हम परमेश्वर के लोगों के लिए तैयार हैं।

यह जॉन के सुसमाचार में परमेश्वर के लोगों का नया नियम सिद्धांत है, या, वास्तव में, जॉन का चर्च का सिद्धांत। जॉन में चर्च, इस बार, मैं एक पेपर से पढ़ रहा हूँ जिसे मैंने लिखा था, जो चर्च के सिद्धांत पर एक खंड का हिस्सा होगा। इसमें पुराने नियम की पृष्ठभूमि और फिर जॉन में समकालिक सुसमाचारों में चर्च का सिद्धांत शामिल है। वास्तव में, हमने लूका को अलग कर दिया क्योंकि लूका प्रेरितों, पॉल और इसी तरह के अन्य लोगों के साथ जाता है।

जॉन में चर्च। हालाँकि रुडोल्फ बुल्टमैन ने साहसपूर्वक दावा किया और उद्धृत किया कि चौथे सुसमाचार में कोई विशिष्ट चर्च संबंधी रुचि नहीं पाई जा सकती है, यह गलत है। जैसा कि रॉबर्ट किसर ने कहा, किसर ने एक पुस्तक लिखी, द फोर्थ इवेंजलिस्ट एंड हिज गॉस्पेल, जो माध्यमिक साहित्य का एक शानदार सारांश होने के लिए प्रसिद्ध है, कम से कम 1975 तक जब इसे लिखा गया था।

जैसा कि काइसर ने कहा, चौथे सुसमाचार के चर्च संबंधी विषय सुसमाचार प्रचारक के विचारों की समग्र तस्वीर में प्रमुख और महत्वपूर्ण हैं, जो एक करीबी उद्घरण है। वास्तव में, जॉन का सुसमाचार परमेश्वर के नए नियम के लोगों में बहुत रुचि दिखाता है। इसमें चर्च, एक्लेसिया शब्द का अभाव है, लेकिन कई बार उस वास्तविकता को संदर्भित करता है, जैसा कि डीए कार्सन जोर देते हैं, उद्घरण, परमेश्वर के लोगों से संबंधित होने का क्या मतलब है, वास्तव में चर्च होने का क्या मतलब है, इसके तत्व प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं, जिसमें चर्च के चुनाव, जीवन, उत्पत्ति, प्रकृति, गवाही, पीड़ा, फल देने, प्रार्थना और एकता पर बहुत कुछ शामिल है।

जॉन के अनुसार सुसमाचार, जॉन पर कार्सन की टिप्पणी, जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, जॉन के धर्मशास्त्र के लिए जॉन पर मेरी पसंदीदा टिप्पणी है। वह कौन सी गोंद है जो जॉन के चर्च के चित्रों और शिक्षाओं को एक साथ रखती है? सुसमाचार में बाकी सब चीजों को एक साथ रखने के लिए उत्तर वही है : मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में उनकी अत्यधिक रुचि। हम चर्च के सात चित्रों को देखकर जॉन के चर्चविज्ञान का अध्ययन करेंगे।

अवलोकन। चर्च वे लोग हैं जो आत्मा और सच्चाई से पिता की आराधना करते हैं। यूहन्ना में परमेश्वर के लोग वे हैं जिन्हें पिता और पुत्र ने बचाया है।

वे अच्छे चरवाहे की भेड़ें हैं। वे वे हैं जो यूहन्ना 13 में यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हैं। वे दाखलता में बनी रहने वाली शाखाएँ हैं, यूहन्ना 15।

वे वे लोग हैं, जो यीशु की महायाजकीय प्रार्थना के विषय हैं, यूहन्ना 17. और अंततः, जिन्हें सुसमाचार का कार्य सौंपा गया है, यूहन्ना अध्याय 20. वे लोग जो आत्मा और सच्चाई से पिता की आराधना करते हैं, यूहन्ना 4:21 से 26, 39 से 42.

परमेश्वर के नए नियम के लोग वे हैं जो परमेश्वर की कृपा से आत्मा और सच्चाई से पिता की आराधना करते हैं। हम यह बात सामरी स्त्री और उसके लोगों के साथ यूहन्ना के व्यवहार से सीखते हैं। यीशु ने आराधना के बारे में उसके विचारों को सुधारा।

उसके लोग अज्ञानता में गेरिजिम पर्वत पर पूजा करते हैं क्योंकि, उद्धरण, उद्धार यहूदियों से है, यूहन्ना 4:22। एक समय आ रहा है जब पूजा भौगोलिक स्थान से स्वतंत्र होगी, यहाँ तक कि यरूशलेम से भी। उस दिन, उद्धरण, सच्चे उपासक आत्मा और सच्चाई से पिता की आराधना करेंगे, श्लोक 24।

क्योंकि परमेश्वर आत्मा है, इसलिए उसके उपासक उसकी आराधना आध्यात्मिक रूप से और उसके शास्त्रों के प्रकाशन के अनुसार करेंगे। यीशु द्वारा उसकी पापी जीवनशैली के बारे में अलौकिक ज्ञान दिखाए जाने के बाद, उसने निष्कर्ष निकाला कि वह एक भविष्यवक्ता था, पद 16 से 18। फिर यीशु ने इस स्त्री को बताया कि वह मसीहा था।

वह अपने शहर सूखार लौटी और दूसरों को यीशु से अपनी मुलाकात के बारे में बताया। उन्होंने उसे अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया। बहुत से सामरी लोग मानते हैं कि यीशु दुनिया के उद्धारकर्ता थे, क्योंकि उनकी गवाही और, सबसे महत्वपूर्ण बात, यीशु के शब्द, श्लोक 42।

यह अंश हमें चर्च के बारे में बताता है। परमेश्वर लोगों के साथ व्यक्तिगत रूप से व्यवहार करता है, सामरी महिला के रूप में, और समूहों में, सामरियों के रूप में। स्टीफन स्माले इस सिद्धांत को, जो जॉन के विचारों की विशेषता है, यहाँ परमेश्वर के लोगों पर लागू होता हुआ देखते हैं।

उद्धरण: जॉन में चर्च का धर्मशास्त्र एक और कई के बीच अच्छी तरह से संतुलित है, उद्धरण बंद करें। स्मॉली की पुस्तक, जॉन इवेंजेलिस्ट और इंटरप्रेटर। यह मार्ग परमेश्वर के लोगों की पहचान के बारे में नए नियम के विस्तारित दृष्टिकोण की दिशा में भी इशारा करता है।

कुछ अपवादों को छोड़कर, इस्राएल राष्ट्रों के लिए प्रकाश बनने की अपनी जिम्मेदारी में विफल रहा। सामरी लोग उत्तरी राज्य के दक्षिणी राज्य के असीरियन निर्वासन में पीछे छूट गए गरीब यहूदियों की संतान थे। और लोग, उद्धरण, असीरिया के राजा ने बाबुल, कूथा, अव्वा, हमात और सफ़रवैम से लोगों को लाया और सामरिया के शहरों में इस्राएलियों के स्थान पर बस गए--2 राजा 17:24। परिणामस्वरूप, यहूदियों ने सामरियों को आधी नस्ल के रूप में माना और उनका तिरस्कार किया। यूहन्ना 4:9. यूहन्ना 8:48.

यीशु धारा के विपरीत तैरते हैं। और लूका के सुसमाचार में, यीशु ने अच्छे सामरी के दृष्टांत के नायक के रूप में सामरियों को प्रस्तुत किया है, लूका 10, 33 से 37। और दस कोढ़ियों में से एकमात्र आभारी व्यक्ति को चंगा किया, लूका 17, 16।

बैरेट ने जॉन के सुसमाचार में सार्वभौमिक मिशन के सबूत के रूप में यीशु के सामरियों के बीच काम पर बहुत ज़ोर दिया। अध्याय चार में उनके विवरण का समापन सामरियों की इस घोषणा के साथ होता है कि यीशु दुनिया के उद्धारकर्ता हैं। उद्धरण समाप्त करें।

यह बैरेट की पुस्तक द गॉस्पेल अकॉर्डिंग टू सेंट जॉन से ली गई है, जो एक बहुत अच्छी व्याख्यात्मक टिप्पणी है। हालाँकि अपने परिचय में बैरेट कहते हैं कि उन्हें यकीन नहीं है कि इसमें से कितना वास्तव में हुआ था। लेकिन उनकी व्याख्या अच्छी है।

यीशु वास्तव में मानवजाति के लिए एकमात्र उद्धारकर्ता है जो यहूदियों, सामरियों और किसी भी अन्य व्यक्ति को बचाता है जो विश्वास करता है। परिणामस्वरूप, सच्चे उपासक के रूप में, वे आत्मा और सच्चाई में पिता का हवाला देते हैं और उसकी आराधना करते हैं। श्लोक 24।

चौथे सुसमाचार में परमेश्वर के लोग वे हैं जिन्हें पिता और पुत्र ने बचाया है। यूहन्ना 6:35 से 40. यीशु के जीवन की रोटी के प्रवचन में नए नियम के परमेश्वर के लोगों की पहचान त्रिएकता से की गई है जो उन्हें बचाता है।

वास्तव में, पिता और पुत्र के साथ जो उन्हें बचाता है। आत्मा का कम से कम एक बार उल्लेख है। लेकिन, मुख्य रूप से, विदाई प्रवचनों में, आत्मा के बारे में जॉन का सिद्धांत पेंटेकोस्ट के बाद की आत्मा की बात करता है।

यीशु ने एक बड़ी भीड़ को खेलाने के लिए रोटियाँ और मछलियाँ बढ़ाई, उसके बाद उसने उन लोगों पर आरोप लगाया जो गलील की झील के पार उसके पीछे चल रहे थे और वे चिन्हों की तलाश और भौतिकवाद के शिकार थे। यूहन्ना 6:26-27. भीड़ ने जंगल में परमेश्वर द्वारा मन्ना के प्रावधान की ओर इशारा करते हुए एक चिन्ह मांगा।

यूहन्ना 6:30 और 31. यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से रोटी नहीं दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है। क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।"

पद 32-33. जैसा कि अक्सर होता है, यीशु के श्रोता उसे गलत समझते हैं और यीशु से आश्चर्यजनक रोटी की मांग करते हैं—पद 34.

यीशु ने कहा कि जीवन की रोटी मैं हूँ। जो कोई मेरे पास आएगा वह भूखा न होगा, और जो कोई मुझ पर विश्वास करेगा वह कभी प्यासा न होगा। 35.

अपने श्रोताओं को उनके अविश्वास के लिए दोषी ठहराने के बाद, यीशु ने सिखाया कि पिता और वह परमेश्वर के नए नियम के लोगों के लिए उद्धार का कार्य करते हैं - श्लोक 36, 36 से शुरू होता है। जिसे पिता मुझे देता है, वह मेरे पास आएगा, और जो मेरे पास आता है, उसे मैं कभी न निकालूँगा।

क्योंकि मैं अपनी इच्छा पूरी करने नहीं, बल्कि अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने स्वर्ग से उतरा हूँ। मेरे भेजनेवाले की इच्छा यही है कि जो उसने मुझे दिए हैं, उनमें से मैं किसी को न खोऊँ, बल्कि उन्हें अंतिम दिन फिर से जिलाऊँ। क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यही है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए, और मैं उसे अंतिम दिन फिर से जिलाऊँगा।

यूहन्ना 6:37-40. यूहन्ना ने रोमियों 8, 29 और 30 में पौलुस द्वारा इस्तेमाल की गई शब्दावली से अलग शब्दावली का इस्तेमाल किया है, लेकिन उनकी शिक्षाएँ एक जैसी हैं। पौलुस ने लिखा कि जिन लोगों को उसने पहले से जान लिया था, उनके लिए उसे अपने बेटे की छवि के अनुरूप होने के लिए भी पहले से ही नियुक्त किया गया था ताकि वह कई भाइयों में ज्येष्ठ हो।

और जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी। और जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया। और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी।

यहाँ दोनों के बीच तुलना दी गई है। पौलुस के पास पूर्वज्ञान है, रोमियों 8:29। पूर्वनियति, वही आयत।

बुलावा पद्य 30 में है। विश्वास छोड़ दिया गया है। औचित्य पद्य 30 में है।

संरक्षण और पुनरुत्थान को छोड़ दिया गया है। महिमा, वही पद्य 30। यूहन्ना के पास पूर्वज्ञान नहीं है, लेकिन उसके पास पूर्वनियति जैसा कुछ है।

पिता लोगों को पुत्र को देता है, यूहन्ना 6:37. पिता उन्हें खींचता है, पौलुस के बुलावे के समानांतर, 37. लोग यीशु के पास आते हैं।

यह यीशु पर विश्वास करने के लिए यूहन्ना की बात है, 37 और 40। लोग अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं, पद्य 40। पुत्र उन्हें बाहर नहीं निकालेगा या खोएगा नहीं, पद्य 37 और 39।

पुत्र उन्हें अंतिम दिन में जिलाएगा, 39 और 40। यूहन्ना के यहाँ महिमा का उल्लेख नहीं है, परन्तु यूहन्ना 17:22 और 24 के समान ही कुछ है। यूहन्ना के पास पौलुस के पूर्वज्ञान, अर्थात् परमेश्वर के लोगों के बारे में पूर्वज्ञान के समान कुछ भी नहीं है।

पिता द्वारा लोगों को पुत्र को सौंपना यूहन्ना के चुनाव के तीन विषयों में से एक है। यह पौलुस के पूर्वनिर्धारण से मेल खाता है। पिता द्वारा लोगों को पुत्र की ओर आकर्षित करना पौलुस के बुलावे से मेल खाता है।

वाले लोगों का आना पौलुस की शिक्षा और विश्वास पर लगातार शिक्षा के अनुरूप है। रोमियों 1:16, 17. रोमियों 3:25 से 30 की तुलना करें।

यूहन्ना में अनन्त जीवन पाने वाले लोग पौलुस में औचित्य के एक परिणाम के अनुरूप हैं। पुत्र द्वारा परमेश्वर के लोगों को सुरक्षित रखना और न खोना पौलुस की कई जगहों पर दी गई शिक्षा के अनुरूप है। रोमियों 8:28 से 39 की तुलना करें, और विशेष रूप से यहाँ, रोमियों 8:29 से 31 तक, कि जो पहले से ही ज्ञात हैं, वे पहले से ही, आयत 29 और 30 में महिमामंडित हैं।

यीशु द्वारा अंतिम दिन लोगों को जीवित करना, पौलुस की उस शिक्षा से मेल खाता है जो यीशु के लौटने पर विश्वासियों के शरीर को शक्तिशाली रूप से रूपांतरित करके उसके महिमामय शरीर के समान बनाती है, फिलिप्पियों 3:20 और 21। बातों को एक साथ जोड़ते हुए, हम देखते हैं कि यूहन्ना ने परमेश्वर के नए नियम के लोगों का वर्णन पिता और पुत्र द्वारा बचाए गए लोगों के रूप में किया है। पिता जिन्हें उद्धार के लिए चुनता है, उन्हें वह यीशु के पास भी खींचता है।

वे यीशु पर विश्वास करते हैं और यीशु उन्हें अनंत जीवन देता है। यीशु उन्हें अंतिम दिन तक बचाए रखेगा, जब वह उन्हें मृतकों में से जिलाएगा। इस प्रकार यूहन्ना परमेश्वर के लोगों के बारे में दो महत्वपूर्ण बातें सिखाता है।

सबसे पहले, परमेश्वर उन्हें शुरू से ही बचाता है, पिता उन्हें चुनता है, और अंत तक, यीशु उन्हें अनंत जीवन के लिए उठाता है। दूसरा, ध्यान दें कि यह वही लोग हैं जिन्हें पिता चुनता है और जिन्हें यीशु द्वारा उठाया जाएगा। इस प्रकार, पिता और पुत्र के उद्धार कार्य के कारण परमेश्वर के लोगों में निरंतरता है।

और स्पष्ट रूप से कहें तो, एक व्यवस्थित धर्मशास्त्री के रूप में, मैं पवित्र आत्मा के कार्य को समाप्त करना चाहता हूँ, हालाँकि यूहन्ना यहाँ ऐसा नहीं कहता है। जैसा कि विशेषता है, वह इस तरह की शिक्षा को यूहन्ना 13 और उसके बाद के विदाई प्रवचनों में शामिल करता है। जैसा कि अक्सर होता है, यूहन्ना यहाँ पवित्र आत्मा का उल्लेख नहीं करता है, लेकिन अगर हम यूहन्ना में अन्य पाठों को 6:37 से 40 के साथ सहसंबंधित करते हैं, तो हम जोड़ते हैं कि आत्मा परमेश्वर के लोगों को पुनर्जीवित करती है, 3:8, 6:63, और हमेशा विश्वासियों में और उनके साथ रहेगी, यूहन्ना 14:16, और 17।

इसलिए, चर्च पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा द्वारा बचाए गए लोग हैं। परमेश्वर के नए नियम के लोगों को त्रिएकत्व के साथ उनके रिश्ते से परिभाषित किया जाता है - अच्छे चरवाहे की भेड़ें, यूहन्ना 10:1 से 16।

परमेश्वर के नए नियम के लोग यीशु की भेड़ें हैं, जो अच्छे चरवाहे हैं। यूहन्ना द्वारा पुराने नियम का उपयोग सिनॉटिक्स से भिन्न है। वे आम तौर पर यीशु के जीवन और सेवकाई में पुराने नियम की पूर्ति की बात करते हैं।

उदाहरण के लिए, इस उद्धरण में, यह सब कुछ प्रभु द्वारा भविष्यद्वक्ता के माध्यम से कही गई बात को पूरा करने के लिए हुआ। देखो, कुंवारी गर्भवती होगी और एक बेटे को जन्म देगी, और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे, जिसका अनुवाद है ईश्वर हमारे साथ है। मत्ती 1:22, 23, यशायाह 7:14 को उद्धृत करते हुए।

इसके विपरीत, यूहन्ना पुराने नियम के संकेत प्रस्तुत करता है, जिसमें यीशु की कहानी में प्रतिरूप शामिल हैं। यह अंतर पूर्ण नहीं है, बल्कि जोर देने वाला है, क्योंकि यूहन्ना और सिनॉटिक्स दोनों में पूरी हुई भविष्यवाणियाँ और संकेत हैं। पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को भेड़ और परमेश्वर को उनका चरवाहा बताया गया है।

यहेजकेल 34 के बारे में सच है, जो यूहन्ना 10 के लिए पृष्ठभूमि प्रदान करता है। प्रभु इस्राएल के चरवाहों से हाय कहते हैं जो अपना पेट पालते हैं। तुम झुंड की देखभाल नहीं करते।

मेरी भेड़ें पूरी धरती पर बिखरी हुई थीं। देखो, मैं चरवाहों के खिलाफ हूँ। जैसे चरवाहा अपनी भेड़ों को उस दिन ढूँढ़ता है जब वह अपने बिखरे हुए झुंड के बीच होता है, वैसे ही मैं भी अपनी भेड़ों को ढूँढ़ूँगा।

मैं उन्हें उन सब स्थानों से छुड़ाऊँगा जहां वे तितर-बितर हो गए हैं। मैं उन पर एक चरवाहा नियुक्त करूँगा, अर्थात् मेरा सेवक दाऊद, जो उनका चरवाहा होगा। मैं यहोवा उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और मेरा सेवक दाऊद उनका प्रधान ठहरेगा।

तब वे जानेंगे कि मैं, यहोवा, उनका परमेश्वर, उनके साथ हूँ और वे, इस्राएल के घराने, मेरे लोग हैं। यहेजकेल 34, कई आयतें। यिर्मयाह 23, 1 से 4 की तुलना करें। यीशु ने भी झूठे चरवाहों की निंदा की।

उद्धरण: मुझसे पहले जितने भी लोग आए वे सभी चोर और लुटेरे हैं। ऐसा करके, उसने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की निंदा नहीं की, बल्कि इस्राएल के झूठे चरवाहों की निंदा की, जो प्राचीन और समकालीन दोनों ही थे, जैसे कि जिन्होंने जॉन 9, पिछले अध्याय में अंधे व्यक्ति के साथ बुरा व्यवहार किया था। यीशु एक अच्छा चरवाहा है जो न केवल अपनी भेड़ों की देखभाल करता है बल्कि उनके लिए अपना जीवन भी दे देता है।

यीशु भेड़ों के लिए परमेश्वर के नए नियम के लोगों की भेड़शाला में प्रवेश करने का द्वार भी है। यूहन्ना 10, 7. मैं द्वार हूँ। यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश करे, तो वह उद्धार पाएगा और भीतर-बाहर आकर चारागाह पाएगा।

कोलिन कूज़ ने यीशु के शब्दों की पृष्ठभूमि बताई। उद्धरण: जिस तरह चरवाहा खुद पत्थर के बाड़े में घुसने वाली भेड़ें सुरक्षित थीं, उसी तरह, जो लोग यीशु पर विश्वास करते हैं वे हमेशा के लिए सुरक्षित हैं। जिस तरह चरवाहा दिन के समय अपनी भेड़ों को चरागाह में ले जाता था और रात में उन्हें अंदर लाता था, उसी तरह यीशु ने भी उन लोगों के लिए प्रावधान किया जो उस पर विश्वास करते हैं।

कॉलिन कूज़, जॉन, टिंडेल न्यू टेस्टामेंट कमेंट्रीज़। प्रतिस्थापन वॉल्यूम। वास्तव में, यीशु, एक अच्छे चरवाहे के रूप में, विश्वासियों को बहुतायत में अनन्त जीवन देने के लिए आया था, श्लोक 10।

यीशु ने नए नियम के लोगों को परमेश्वर की भेड़ों के रूप में पहचाना जिनके लिए वह अपना जीवन देता है, आयत 11 और 15। वफादार चरवाहे कभी-कभी अपनी भेड़ों को शेर या भालू से सुरक्षित रखने के लिए अपनी जान जोखिम में डालते हैं, 1 शमूएल 17:35 से तुलना करें। हालाँकि, चरवाहे अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान नहीं देना चाहते थे क्योंकि तब उनकी रक्षा करने वाला कोई नहीं होगा।

लेकिन यीशु एक अच्छा चरवाहा है जो अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। यीशु ने अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान दे दी। वह पापियों को बचाने के लिए मरा, जैसा कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने कहा, उद्धरण, देखो परमेश्वर का मेम्रा जो जगत का पाप उठा ले जाता है, यूहन्ना 1:29 और 36।

जंगल में मूसा का कार्य कूस पर चढ़ाए गए मसीह का एक प्रकार है, उद्धरण, जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊपर उठाया, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना चाहिए ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, उसे अनन्त जीवन मिले, यूहन्ना 3:14 और 15। यीशु, अच्छा चरवाहा जो अपना जीवन देता है, उसे फिर से लेता है। वह खुद को मृतकों में से उठाता है, यूहन्ना 10:17 और 18।

यह उन दो स्थानों में से एक है जहाँ शास्त्र कहता है कि यीशु ने खुद को मृतकों में से जीवित किया। दूसरा है यूहन्ना 2:19 से 22। कूस पर चढ़ाया गया व्यक्ति विश्वासियों को जीवन देने के लिए जीवित है।

अपनी आसन्न मृत्यु और उसके बाद के पुनरुत्थान के बारे में बोलते हुए, उन्होंने कहा, थोड़े समय में, दुनिया मुझे फिर कभी नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे, यूहन्ना 14:19। यीशु के सबसे लगातार मसीह संबंधी विषयों में से एक यीशु एक जीवनदाता के रूप में है, जो अनन्त जीवन प्रदान करता है। जिसने सृष्टि में पिता के प्रतिनिधि के रूप में सब कुछ को जीवन दिया, 1, 3, यूहन्ना 5:21, 10:28, 11:25, 14:6 के सुसमाचार में

विश्वासियों को उपहार के रूप में अनन्त जीवन देता है। हालाँकि यूहन्ना की शब्दावली पौलुस से भिन्न है, यूहन्ना 2 सिखाता है कि परमेश्वर अपने नए नियम के लोगों को उनके उद्धार को अपने बेटे की मृत्यु और पुनरुत्थान से जोड़कर परिभाषित करता है।

यीशु अपनी भेड़ों को अनन्त जीवन देने के लिए मरा और जी उठा। परिणामस्वरूप, चरवाहा और भेड़ें एक दूसरे को वाचा में जानते हैं, उद्धारण, मैं अच्छा चरवाहा हूँ, मैं अपने लोगों को जानता हूँ और मेरे अपने मुझे जानते हैं, जैसे पिता मुझे जानते हैं और मैं पिता को जानता हूँ, यूहन्ना 10:14 और 15। जॉर्ज बेस्ली मरे ने जॉन के विचार को पकड़ते हुए कहा कि चरवाहे और उसकी भेड़ों का आपसी ज्ञान एक अंतरंग संबंध को दर्शाता है जो पिता और पुत्र के बीच प्रेम की संगति को दर्शाता है।

जॉर्ज बेस्ली मरे, जॉन इन द वर्ड बाइबिलिकल कमेंट्री। जॉन 10 भी परमेश्वर के नए नियम के लोगों की सार्वभौमिकता और एकता की ओर इशारा करता है। यीशु ने कहा, लेकिन मेरे पास और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला से नहीं हैं।

मुझे उन्हें भी लाना होगा, और वे मेरी आवाज़ सुनेंगे। तब एक झुंड होगा, एक चरवाहा होगा, श्लोक 16। अन्य भेड़ें गैर-यहूदी विश्वासी हैं, जो परमेश्वर की कृपा से, यहूदी विश्वासियों के साथ मिलकर ईसाई चर्च का निर्माण करेंगे।

लियोन मॉरिस इस बात पर जोर देते हैं। अन्य भेड़ें जिन्हें यीशु को लाना है, वे हैं, जो यहूदी धर्म में नहीं पाई जाती हैं। ये शब्द सुसमाचार के विश्वव्यापी दायरे को देखते हैं।

वे भी चरवाहे की आवाज़ सुनेंगे। अंतिम परिणाम एक झुंड और एक चरवाहा होगा। अन्य भेड़ों को मौजूदा भेड़ों से अलग नहीं रहना चाहिए, जैसे कि एक यहूदी चर्च और एक अलग गैर-यहूदी चर्च हो।

उन्हें एक झुंड में एकजुट होना है, और वे सभी एक चरवाहे के नेतृत्व में खड़े हैं। यह एकता कोई स्वाभाविक एकता नहीं है, बल्कि उन्हें लाने में चरवाहे की गतिविधि द्वारा लाई गई एकता है। लियोन मॉरिस, जॉन के अनुसार सुसमाचार, नए नियम पर नई अंतर्राष्ट्रीय टिप्पणी, NICNT।

नए नियम में परमेश्वर के लोगों की एक और तस्वीर वे लोग हैं जो यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हैं। यूहन्ना 13:15 से 17. नए नियम में परमेश्वर के लोग वे हैं जो यीशु को जानते हैं और उससे प्रेम करते हैं तथा उसके उदाहरण का अनुसरण करते हैं।

यूहन्ना 13 में जब यीशु अपने शिष्यों के पैर धोता है, तो यूहन्ना इस सत्य को शक्तिशाली रूप से प्रस्तुत करता है। प्रेरित यह सुनिश्चित करके कि यीशु नियंत्रण में था, यहूदा द्वारा यीशु के विश्वासघात और मृत्यु के लिए मंच तैयार करता है। उद्धारण: यीशु जानता था कि इस दुनिया से पिता के पास जाने का उसका समय आ गया है।

यूहन्ना 13:1. पहले, यीशु ने कहा था कि उसका समय अभी नहीं आया है। 2:4, 7:30, 8:20. अब, उसके मरने, जी उठने और पिता के पास लौटने का नियत समय आ गया था।

यूहन्ना आगे कहते हैं, "अपने लोगों से जो संसार में हैं, प्रेम करके उसने उनसे अन्त तक प्रेम किया, यूहन्ना 13 की आयत 1।" यीशु के अपने वे लोग हैं जिन्हें पिता ने उसे दिया था। उसने उनसे पृथ्वी पर अपने मिशन के अन्त तक और अन्तिम सीमा तक प्रेम किया, जैसा कि यह विवरण दर्शाता है।

पद 2 में यूहन्ना ने विश्वासघाती यहूदा और उसे प्रेरित करने वाले दुष्ट का उल्लेख किया है। एक बार फिर, यूहन्ना हमें याद दिलाता है कि चीजें यीशु के नियंत्रण से बाहर नहीं हुई थीं। उद्धरण: यीशु जानता था कि पिता ने सब कुछ उसके हाथों में दे दिया है, कि वह परमेश्वर से आया है, और कि वह परमेश्वर के पास वापस जा रहा है, पद 3। तब यीशु ने कुछ ऐसा किया जिससे उसके शिष्य चकित हो गए। वह उठा, तैयार हुआ, और उनके पैर धोने लगा, पद 4 और 5। यह कुछ ऐसा था जो केवल सामाजिक स्तर पर निचले स्तर के लोग अपने से ऊपर के लोगों के लिए करते थे।

ध्यान दें कि हालाँकि उनके पैर धूल से सने हुए थे, फिर भी शिष्यों में से किसी ने भी अपने साथियों के पैर धोने की इच्छा नहीं जताई। ऐसा करना अपमानजनक होगा। वास्तव में, पैर धोना ऐसा काम नहीं था जो एक शिक्षक अपने शिष्यों के लिए करता था, एक पिता अपने परिवार के लिए करता था, या एक पति अपनी पत्नी के लिए करता था।

यह, उद्धरण, एक ऐसा कार्य था जो आम तौर पर निम्नतम नौकरों के लिए आरक्षित था, उद्धरण बंद करें, डीए कार्सन, जॉन पर टिप्पणी। यीशु ने यह स्थान लिया, यह स्थान, और इसने उसके शिष्यों को चौंका दिया। शमौन पतरस अविश्वसनीय था, और यीशु ने उससे कहा कि वह बाद में छंद 6 और 7 को समझ जाएगा। पतरस के विरोध करने के बाद, आप मेरे पैर कभी नहीं धोएँगे, यीशु ने जोर देकर कहा कि अगर कोई उसका होना चाहता है तो यह कार्य आवश्यक है।

फिर पतरस ने यीशु से कहा कि वह उसके हाथ और सिर भी धो दे। पतरस एक टाँका है, 13:9, उद्धरण, जो नहा चुका है, यीशु ने उससे कहा, उसे अपने पैरों को छोड़कर कुछ भी धोने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन वह पूरी तरह से साफ है (पद 10)। यीशु यहाँ प्रकट करते हैं कि यह शारीरिक धुलाई आध्यात्मिक सफाई का प्रतीक है।

शिष्यों को अभी तक यह समझ में नहीं आया था कि यीशु ने उनके पैर एक विनम्र कार्य के रूप में धोए थे, जो उनके लिए क्रूस पर जाने के उनके सबसे विनम्र कार्यों, सबसे विनम्र कार्यों की ओर इशारा करता है। उनके प्रायश्चित से पाप से शुद्धि हुई, जिसका संकेत पैर धोने से मिलता है। यीशु ने घोषणा की कि 11 शिष्य, उद्धरण, शुद्ध और क्षमा किए गए थे, लेकिन पद 10 और 11 में विश्वासघाती यहूदा को बाहर रखा।

यीशु ने अपने बाहरी वस्त्र वापस पहनने के बाद, पैर धोने का दूसरा अर्थ बताया। पहला अर्थ यह है कि हमें प्रतिदिन पाप से शुद्ध होने की आवश्यकता है। क्या आप जानते हैं कि मैंने आपके लिए क्या किया है? मैं यूहन्ना 13 के 12 से 17 को उद्धृत कर रहा हूँ।

तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और तुम ठीक ही कहते हो क्योंकि मैं वही हूँ। इसलिए, यदि मैंने, तुम्हारे गुरु और प्रभु ने, तुम्हारे पैर धोए हैं, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिए। क्योंकि मैंने तुम्हें एक उदाहरण दिया है कि जैसा मैंने तुम्हारे लिए किया है, वैसा ही तुम भी करो।

मैं तुम से सच कहता हूँ, कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, और न दूत अपने भेजनेवाले से बड़ा होता है। यदि तुम ये बातें जानते हो, तो उन पर चलो तो धन्य हो। यूहन्ना 13:12 से 17.

यहाँ, यीशु परमेश्वर के लोगों को उन लोगों के रूप में परिभाषित करता है जो उसे शिक्षक और प्रभु के रूप में संबोधित करते हैं और जो उसकी विनम्र सेवा के उदाहरण का अनुसरण करते हैं। वह प्रभु के भोज में बपतिस्मा की तरह पैर धोने को चर्च के अध्यादेश के रूप में स्थापित नहीं कर रहा है। इसके बजाय, उसने उन्हें उदाहरण के द्वारा सिखाया कि उन्हें खुद को एक दूसरे से या उन लोगों से ऊपर नहीं उठाना चाहिए जिनकी वे सेवा करेंगे।

इसके बजाय, उन्हें उस व्यक्ति के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए जिसने कहा, "जो कोई तुम्हारे बीच बड़ा बनना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने और जो कोई तुम्हारे बीच प्रथम बनना चाहे, वह सबका दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी सेवा कराने नहीं, परन्तु सेवा करने और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण देने आया है।" मरकुस 10:43 से 45.

अंतिम पद में प्रसिद्ध छुड़ौती कथन शामिल है। मरकुस में यीशु यूहन्ना 13:1 से 17 की तुलना में अधिक प्रत्यक्ष हैं। मरकुस में, यीशु दूसरों के प्रति विनम्र सेवा के सबसे बड़े उदाहरण के रूप में अपने क्रूस का उपयोग करते हैं, जबकि यूहन्ना केवल उनके प्रति अपने प्रेम को दिखाने की भाषा के साथ इसका संकेत देता है।

यह पैर धोने से पहले की बात है। यीशु सबसे पहले उन सभी के उद्धारकर्ता हैं जो उद्धार के लिए उन पर विश्वास करते हैं। उनके उदाहरण का अनुसरण करने से उद्धार नहीं मिलता।

बल्कि, जिन्होंने उस पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा किया है, वे पाते हैं कि वह उनका भी उदाहरण है। मॉरिस इस सत्य के बारे में बिल्कुल सटीक बात कहते हैं। शिष्यों को अपनी गरिमा पर अड़े नहीं रहना चाहिए या खुद को बहुत ऊंचा नहीं समझना चाहिए।

यदि उनके स्वामी और भेजने वाले नीच कार्य करते हैं, तो उन्हें, दासों और भेजे गए लोगों को, नीच कार्यों को अपनी गरिमा से नीचे नहीं समझना चाहिए। उद्धारण बंद करें। जॉन के सुसमाचार पर मॉरिस की टिप्पणी।

विश्वासी दाखलता में बने रहते हैं, यूहन्ना 15:1 से 6. नए नियम के अनुसार, परमेश्वर के लोग वे शाखाएँ हैं जो यीशु, सच्ची दाखलता में बनी रहती हैं। हमेशा की तरह, यूहन्ना ने यीशु के विस्तृत प्रवचन को पुराने नियम की पृष्ठभूमि में रखा है। यहाँ, उन्होंने भजन संहिता से एक पाठ और भविष्यवक्ताओं से कम से कम छह पाठ शामिल किए हैं।

भजन 80, यशायाह 5, यिर्मयाह 2, यहजकेल 17:19, होशे 1. इनमें से सबसे प्रासंगिक यशायाह 5:1 से 8 है, और मैं उद्धृत करता हूँ, मैं अपने प्रिय के बारे में गाऊंगा, मेरे प्रिय के दाख की बारी

के बारे में एक गीत। जिस व्यक्ति से मैं प्यार करता हूँ, उसके पास एक बहुत उपजाऊ पहाड़ी पर एक दाख की बारी थी। उसने मिट्टी को तोड़ा, उसमें से पत्थर हटाए, और उसमें बेहतरीन दाख की बेलें लगाईं।

उसने उसके बीच में एक मीनार बनवाई और वहाँ एक दाख की बारी भी खुदवाई। उसने उम्मीद की थी कि उसमें अच्छे अंगूर होंगे, लेकिन उसमें बेकार अंगूर निकले। इसलिए अब, हे यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के लोगों, कृपया मेरे और मेरे दाख की बारी के बीच न्याय करो।

मैं अपने अंगूर के बगीचे के लिए इससे ज़्यादा और क्या कर सकता था? जब मैंने अच्छे अंगूरों की उम्मीद की थी, तो इसने बेकार अंगूर क्यों दिए? अब, मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं अपने अंगूर के बगीचे के साथ क्या करने जा रहा हूँ। मैं इसकी बाड़ हटा दूँगा, और यह भस्म हो जाएगी। मैं इसकी दीवार गिरा दूँगा, और यह रौंद दी जाएगी।

मैं इसे बंजर भूमि बना दूँगा। इसमें न तो कोई कटाई-छँटाई होगी और न ही कोई खरपतवार निकाली जाएगी। यहाँ काँटे और झाड़ियाँ उग आएंगी।

मैं बादलों को भी आज्ञा दूँगा कि उस पर वर्षा न हो। क्योंकि सेनाओं के यहोवा की दाख की बारी इस्राएल का घराना है, और यहूदा के लोग उसके मनभावने पौधे हैं। उसने न्याय की आशा की, परन्तु अन्याय देखा।

उसने धार्मिकता की अपेक्षा की, लेकिन उसे निराशा की चीखें और भीड़ सुनाई दी। उसने धार्मिकता की अपेक्षा की, लेकिन उसे निराशा की चीखें सुनाई दी। इस्राएल, परमेश्वर के पुराने नियम के लोग, प्रभु की दाख की बारी थी, जो बेकार अंगूर देती थी।

यशायाह पाँच की आयत दो और चार। यीशु एक सच्ची दाखलता है, और उसमें सभी शाखाएँ परमेश्वर के नए नियम के लोग हैं, जो उससे जीवन प्राप्त करते हैं और परिणामस्वरूप अच्छे और स्थायी फल लाते हैं। यूहन्ना में तीन बार, यीशु पुराने नियम की वास्तविकता की सच्ची पूर्ति होने का दावा करता है।

वह सच्चा प्रकाश है, 1:9. स्वर्ग से सच्ची रोटी, 6:32. और सच्ची दाखलता, 15:1.

हालाँकि यूहन्ना कभी-कभी किसी झूठी चीज़ के विपरीत सत्य का उपयोग करता है, इन तीन घटनाओं में, उसका मतलब है कि यीशु असली ज्योति, असली रोटी या असली दाखलता है। अर्थात्, वह वह वास्तविकता है जिसकी ओर पुराने नियम के प्रतीक संकेत करते हैं। इस्राएल को राष्ट्रों के लिए एक ज्योति माना जाता था, लेकिन वह उस कार्य में काफी हद तक विफल रहा।

यीशु संसार की सच्ची ज्योति है, 1:9। यीशु ने जंगल में इस्राएलियों को मन्ना दिया, लेकिन जिन्होंने खाया वे अंततः मर गए। यीशु सच्ची रोटी है, और जो कोई भी इसे खाएगा, अर्थात् उस पर विश्वास करेगा, वह हमेशा के लिए जीवित रहेगा (यूहन्ना 6:51)।

इसाएल यहोवा की दाख की बारी थी, लेकिन उसने वह अच्छे अंगूर नहीं पैदा किए जो वह चाहता था। यीशु, सच्ची दाखलता, उन लोगों में और उनके माध्यम से बहुत सारे फल पैदा करती है जो उसमें बने रहते हैं। कूज़ प्राचीन फ़िलिस्तीनी अंगूर की खेती, अंगूर की खेती का सारांश देते हैं, जो इस अंश को सूचित करता है।

उन्होंने दो प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है: बेलों को प्रशिक्षित करना और शाखाओं की छंटाई करना। उद्धरण: बेलों को दो तरीकों में से एक में प्रशिक्षित किया जाता था। एक, उन्हें ज़मीन पर फैलने दिया जाता था, और फिर फल देने वाली शाखाओं को हवा देने के लिए उनके नीचे पत्थर या डंडे रखकर ऊपर उठा दिया जाता था।

या दो, उन्हें शुरू से ही खंभों या जाली पर प्रशिक्षित किया जाता था, शाखाओं को इन पर चढ़ाया जाता था ताकि उनका फल-असर बेहतर हो सके। पहली छंटाई वसंत में हुई, जिसमें चार ऑपरेशन शामिल थे। एक है जोरदार टहनियों की बढ़ती हुई नोक को हटाना।

दूसरा, बढ़ती हुई टहनियों के सिरे को काटना ताकि हवा से पूरी टहनियाँ टूट न जाएँ। तीसरा, कुछ फूलों या अंगूर के गुच्छों को हटाना ताकि जो बचे रहें वे ज़्यादा और बेहतर गुणवत्ता वाले फल पैदा कर सकें। और चौथा, ज़मीन के नीचे उगने वाले सकर्स को हटाना।

वसंत ऋतु में छंटाई में लकड़ी की शाखाओं को हटाना या उन्हें जलाना शामिल नहीं था। दूसरी छंटाई शरद ऋतु में अंगूर की कटाई के बाद और बेलों के निष्क्रिय होने के बाद की गई। इसमें अवांछित शाखाओं को हटाना और वांछित शाखाओं को काटना शामिल था।

शरद ऋतु की छंटाई के बाद, कई लकड़ी के सहित कटिंग को इकट्ठा किया गया और जला दिया गया।" उद्धरण बंद करें। कूज़, जॉन पर टिप्पणी, पृष्ठ 315। यीशु ने कहा, मैं सच्ची दाखलता हूँ और जोड़ा, और मेरे पिता माली हैं, पद 1। इस प्रकार यीशु पिता के नेतृत्व को स्वीकार करते हैं और पुष्टि करते हैं कि वे मिलकर काम करते हैं।

परिणामस्वरूप, शास्त्रों में, बिना फल के परिणाम का अर्थ है कोई शाश्वत जीवन नहीं। तो, यह यहाँ है। उद्धरण: मुझमें हर वह शाखा जो फल नहीं देती, वह उसे हटा देती है।

उद्धरण समाप्त करें। पिता फलहीन शाखाओं को काट देता है। ये वे लोग हैं जो यीशु को जानने का दावा करते हैं, लेकिन उनकी फलहीनता उनकी असली स्थिति को प्रकट करती है।

पिता, उद्धरण, हर उस शाखा को छाँटता है जो फल देती है ताकि वह और अधिक फल दे, श्लोक 2। यह ऊपर उल्लिखित फलदायीपन को बढ़ावा देने के लिए वसंत ऋतु में की जाने वाली छंटाई है। शब्दों के खेल से, यीशु ने शिष्यों को फल देने वाली शाखाओं से पहचाना जब उसने कहा, तुम पहले से ही उस वचन के कारण शुद्ध हो जो मैंने तुमसे कहा है। यदि यह एक शब्द-खेल है तो वह छाँटता है यदि तुम पहले से ही शुद्ध हो।

परमेश्वर द्वारा शुद्धिकरण यह दर्शाता है कि छंटाई शुद्धिकरण को इंगित करती है। यीशु अपने शिष्यों द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए विश्वासियों को आज्ञा देते हैं, मुझमें और मैं और तुम में बने रहो।

यूहन्ना 15, 3. जिस तरह शाखाएँ बेल के बिना फल नहीं दे सकतीं, उसी तरह मनुष्य यीशु के बिना परमेश्वर के लिए फल नहीं दे सकते।

सच्ची दाखलता जो उपहार के रूप में अनन्त जीवन देती है श्लोक 4 और 5। इसके अलावा, यदि कोई मुझमें नहीं रहता, तो वह एक शाखा की तरह फेंक दिया जाता है, और वह सूख जाता है। फिर वे उन्हें इकट्ठा करते हैं, उन्हें आग में फेंक देते हैं, और वे जल जाते हैं, श्लोक 6। यहाँ उद्धृत विटीकल्चरल पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, यह शरद ऋतु की छंटाई को संदर्भित करता है जब शाखाएँ जो अब फल देने वाली नहीं होती हैं, उन्हें काट दिया जाता है, आग में डाल दिया जाता है, और जला दिया जाता है। कृज़ सही उद्धरण है; निहितार्थ यह है कि जो लोग यीशु की आज्ञा नहीं मानते हैं वे न्याय का अनुभव करेंगे।

यूहन्ना 3:18, 8:21, 24, 12:25, 48, 17:12. प्राथमिक संदर्भ संभवतः यहूदा इस्करियोती का था। निष्क्रिय आवाज़ का उपयोग यह दर्शाता है कि परमेश्वर ही वह है जो न्याय को लागू करता है, जो एक करीबी उद्धरण है।

परमेश्वर के सच्चे लोग यीशु की दिव्यता में बने रहते हैं और परिणामस्वरूप, उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, जिससे पता चलता है कि वे उसके लोग हैं। यीशु ने उसमें बने रहने या बने रहने के विचार को विस्तार से बताया है। जो लोग उसमें बने रहते हैं और उसके वचन का पालन करते हैं, उन्हें प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा।

यूहन्ना 15, पद 7, पद 16 की तुलना करें। परमेश्वर पिता को महिमा तब मिलती है जब विश्वासी बहुत अधिक फल उत्पन्न करके यीशु में अपने विश्वास की वास्तविकता को प्रदर्शित करते हैं। पद 8 में, आश्चर्यजनक रूप से, यीशु के अपने लोगों के प्रति प्रेम का माप पिता का उसके प्रति प्रेम है, पद 9। यूहन्ना 15:1 से 16 में बने रहने की अवधारणा का कई बार उल्लेख किया गया है और यहाँ पाठ इसे परिभाषित करने के सबसे करीब आता है, उद्धरण, जैसा पिता ने मुझसे प्रेम किया है, वैसा ही मैंने भी तुमसे प्रेम किया है।

मेरे प्रेम में बने रहो, श्लोक 9. मसीह में बने रहना या बने रहना का अर्थ है उसके प्रेम में बने रहना। बीज़ले मुरे लिखते हैं, उद्धरण, यीशु में बने रहना भी उसके प्रेम में बने रहना है, ठीक वैसे ही जैसे यीशु अपने पूरे जीवन में पिता के प्रेम में बने रहे, उद्धरण समाप्त करें। यीशु के प्रेम में बने रहने में उसकी आज्ञा का पालन करना शामिल है जैसे उसने पिता की आज्ञा का पालन किया, श्लोक 10.

मसीह में बने रहने से आनन्द उत्पन्न होता है, पद 11, और अन्य विश्वासियों के लिए प्रेम, उद्धरण, एक दूसरे से प्रेम करो जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है, पद 12। अपने लोगों के लिए यीशु के प्रेम का सर्वोच्च प्रदर्शन उनके लिए अपना जीवन देना है, पद 13। यहाँ, यीशु सिखाते हैं कि परमेश्वर के आज्ञाकारी नए नियम के लोग यीशु के मित्र हैं, पद 14 और 15।

यह यीशु के साथ व्यक्तिगत संबंध की बात करता है, जो चौथे सुसमाचार का विषय है। इस पर विचार करें: यह अनन्त जीवन है, कि वे तुम्हें जानें, यीशु ने प्रार्थना की, एकमात्र सच्चा परमेश्वर,

और जिसे तुमने भेजा है, यीशु मसीह, यूहन्ना 17:3। यीशु ईश्वरीय चुनाव के विषय पर लौटते हैं जिसे हमने 637 में देखा था। तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना है।

मैंने तुम्हें नियुक्त किया है कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे, 15:16। यूहन्ना 15 में जोर शिष्यों की मसीह में बने रहने की जिम्मेदारी पर है ताकि वे बहुत अधिक फल पैदा कर सकें। लेकिन कहीं हम यूहन्ना के संदेश को गलत न समझ लें, इसलिए यहाँ, स्थायी मार्ग के अंत में, यूहन्ना ईश्वरीय संप्रभुता का स्पष्ट संकेत देता है।

पवित्रशास्त्र में केवल यहीं पर यीशु चुनाव के लेखक हैं; श्लोक 19 से तुलना करें। अंततः, उन्होंने उद्धार और फलदायी होने के लिए शिष्यों को चुना। उन्हें उनके साथ बने रहने और फलदायी मसीही जीवन जीने के लिए उनकी आज्ञा माननी चाहिए।

लेकिन उनका कार्यक्रम कोई स्व-सहायता कार्यक्रम नहीं है, क्योंकि इसके नीचे परमेश्वर के पुत्र की अनंत भुजाएँ हैं। यूहन्ना 15 में, यूहन्ना के सुसमाचार के बाकी हिस्सों की तरह, मसीह पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यहाँ वह सच्ची दाखलता है, पुराने नियम के प्रकारों की पूर्ति, जो पिता के साथ और उसके अधीन काम करता है।

परमेश्वर के नए नियम के लोग वे हैं जो उससे जीवन प्राप्त करते हैं और परिणामस्वरूप अच्छे और स्थायी फल लाते हैं। यीशु इस मार्ग में अक्सर उसमें बने रहने या बने रहने की बात करते हैं। बने रहना वाचागत और संबंधपरक है।

मसीह में बने रहना उसके साथ संगति करना है, जैसे कि परमेश्वर पिता के साथ संगति होती है। 1 यूहन्ना 1:3 से तुलना करें। परमेश्वर के नए नियम के लोग वे हैं जो पुत्र में बने रहते हैं और पिता और उसके लिए फल उत्पन्न करते हैं, जो यीशु की महायाजकीय प्रार्थना के पात्र हैं।

यूहन्ना 17:17-23. परमेश्वर के नए नियम के लोग वे हैं जिनके लिए यीशु अपनी महायाजकीय प्रार्थना में प्रार्थना करता है। हालाँकि टिप्पणीकारों में विवरणों के बारे में मतभेद है, लेकिन इस अध्याय की पारंपरिक रूपरेखा व्यापक और उपयोगी है।

यीशु अपने लिए प्रार्थना करते हैं, पद 1-5, उनके शिष्यों के लिए, पद 6-19, और भावी विश्वासियों के लिए, पद 20-26। जैसा कि हमने 13:1 में देखा, लेकिन अब यीशु के मुख से, क्रूस पर मरने, मृतकों में से जी उठने, स्वर्गारोहण करने और पिता के पास लौटने के द्वारा पिता की महिमा करने का समय आ गया था, पद 1। यीशु अपने पिता के संबंध में अपने लिए प्रार्थना करके शुरू करते हैं। वास्तव में, क्रूस और खाली कब्र पिता, पुत्र और पिता की पारस्परिक महिमा को दर्शाती है, पद 1। पिता ने पुत्र को सार्वभौमिक अधिकार दिया ताकि वह उन लोगों को अनन्त जीवन का उपहार दे सके जिन्हें पिता ने चुना है, जिन्हें उसने पुत्र को दिया है, पद 2। फिर यीशु अनन्त जीवन को संबंधात्मक रूप से परिभाषित करता है।

पिता और पुत्र को जानना है, पद 3. यीशु ने मरने और जी उठने के अपने मिशन को पूरा करके पिता को महिमा दी है, पद 4, क्योंकि यीशु इस प्रार्थना में पुनरुत्थान के बाद के दृष्टिकोण को अपनाते हैं। वह पूछता है, अब, पिता, मुझे अपनी उपस्थिति में उस महिमा से महिमामन्वित करें जो

दुनिया के अस्तित्व में आने से पहले मुझे आपके साथ मिली थी। इसके बाद, यीशु अपने शिष्यों, 11 और उनके प्रतिनिधित्व करने वालों के लिए प्रार्थना करता है, पद 6 से 19 तक।

बैरेट ने जॉन के चर्च के सिद्धांत में शिष्यों के महत्व को स्पष्ट रूप से सामने लाया है। उद्धरण: जॉन लगातार और सही ढंग से मंत्रालय की अवधि में चर्च को पूर्वनिर्धारित पाता है। मुख्य रूप से, यह शिष्यों द्वारा पूर्वनिर्धारित है।

चौथे सुसमाचार का एक प्रमुख ईसाई धर्म संबंधी विषय यीशु का ईश्वर को प्रकट करने वाला होना है। वह पिता से कहता है, उद्धरण, मैंने तेरा नाम उन लोगों पर प्रकट किया जिन्हें तूने संसार से मुझे दिया था। वे तेरे थे।

आपने उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने आपके वचन को माना है। अब वे जानते हैं कि आपने मुझे जो कुछ भी दिया है वह सब आपसे ही है, क्योंकि मैंने उन्हें वे शब्द दिए हैं जो आपने मुझे दिए थे। उन्होंने उन्हें प्राप्त किया है और निश्चित रूप से जान लिया है कि मैं आपकी ओर से आया हूँ।

उन्होंने विश्वास किया है कि आपने मुझे भेजा है। यूहन्ना 17:6 से 8. यीशु ने चुने हुए लोगों को पिता के बारे में बताया। पिता ने उन्हें चुना और उन्हें पुत्र को दे दिया।

पुत्र ने पिता को उनके सामने प्रकट किया, और उन्होंने पद 6 में विश्वास किया। प्रकटकर्ता यीशु ने उन्हें पिता द्वारा दिया गया संदेश बताया, और वे पिता को जानते हैं। परिणामस्वरूप, वे पुत्र के अवतार में विश्वास करते हैं, पद 6 से 8 तक। परमेश्वर के नए नियम के लोग वे हैं जो पिता और पुत्र को जानते हैं क्योंकि पुत्र की सेवकाई परमेश्वर के प्रकटकर्ता के रूप में है। बेशक, वे आत्मा को भी जानते हैं, लेकिन यूहन्ना यहाँ इसे ठीक से नहीं कहता है।

यीशु उन लोगों के लिए प्रार्थना करता है जिन्हें पिता ने उसे दिया है, न कि संसार के लिए, पद 9। पिता और पुत्र सभी चीजों को साझा करते हैं, और आश्चर्यजनक रूप से, पुत्र घोषणा करता है कि वह अपने लोगों में महिमावान होता है, विश्वास करने में उनकी अनिच्छा और क्रूस पर चढ़ने के समय उनके त्याग के बावजूद, पद 10। यीशु खुद को अब दुनिया में नहीं मानते हैं, और वह अपने अनुयायियों के लिए प्रार्थना करते हैं, जिन्हें वह पिता के पास लौटने के बाद पीछे छोड़ देंगे, पद 10। यीशु ने पिता से परमेश्वर के नए नियम के लोगों की रक्षा करने और उन्हें एकीकृत करने के लिए कहा।

यीशु ने विश्वासघाती यहूदा को छोड़कर सभी की रक्षा की। यीशु ने यह तब किया जब वह उनके साथ था। अब वह पिता के पास वापस जा रहा है, जिससे उसने उनकी रक्षा करना जारी रखने के लिए कहा, आयत 11 और 12।

परमेश्वर के लोग वे हैं जिनके लिए पुत्र प्रार्थना करता है, यहाँ तक कि वे भी जो उसके और पिता द्वारा संरक्षित हैं; तुलना करें यूहन्ना 10:28, और 29। इससे पहले, यीशु ने अपने शिष्यों को आनन्द दिया, 15:11, 16, 20, 22, 24। अब वह प्रार्थना करता है कि उनका आनन्द बढ़ जाए, यूहन्ना 17:13।

क्योंकि शिष्य संसार के नहीं हैं, जैसा कि यीशु ने कहा, जब उसने उन्हें परमेश्वर का वचन दिया, तो संसार ने उनसे घृणा की, पद 14 और 16। पुनः, यीशु संसार में अपने लोगों की परमेश्वर से सुरक्षा के लिए प्रार्थना करता है, इस बार शैतान से, पद 15। यीशु अपने और उनके पवित्रीकरण के बारे में बोलकर शिष्यों के लिए अपनी प्रार्थना समाप्त करता है।

उन्हें सत्य के द्वारा पवित्र करो। तुम्हारा वचन सत्य है। जैसे तुमने मुझे जगत में भेजा, वैसे ही मैंने भी उन्हें भेजा है। (पद 17 और 19)

बेशक, मैं उनके लिए खुद को पवित्र करता हूँ, ताकि वे भी सच्चाई से पवित्र हो जाएँ, आयत 17 और 19। बेशक, यहाँ पवित्रीकरण का इस्तेमाल दो अलग-अलग अर्थों में किया गया है। यीशु का पवित्रीकरण उसका पुजारी के रूप में समर्पण है, उस कार्य के लिए जिसे पूरा करने के लिए पिता ने उसे भेजा था, उन सभी के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए जो उस पर विश्वास करेंगे।

यीशु का पुरोहितीय अभिषेक उसके अनुयायियों के पाप से पवित्रीकरण का आधार है, जिसके लिए वह प्रार्थना करता है। पद 17 और 19. परमेश्वर सत्य के वचन, सुसमाचार के माध्यम से यीशु के कार्य को अपने लोगों पर लागू करता है, पद 17.

यीशु द्वारा प्रायश्चित्त करने के अपने मिशन को पूरा करने से उसके शिष्यों का पवित्रीकरण होता है और उनका मिशन दूसरों को सुसमाचार सुनाना है, पद 18। जब यीशु अपनी पुरोहितीय प्रार्थना के तीसरे और अंतिम भाग की शुरुआत करते हैं, यूहन्ना 17 के पद 19 से 26, तो वे प्रेरितों और धर्मातरित लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं। मैं न केवल इनके लिए प्रार्थना करता हूँ, बल्कि उन लोगों के लिए भी जो उनके वचन के माध्यम से मुझ पर विश्वास करते हैं, पद 20।

वह उनकी एकता के लिए प्रार्थना करता है, जिसकी तुलना वह पिता के साथ अपनी एकता से करता है, पद 21। यीशु प्रार्थना करता है कि जैसे पिता और पुत्र परस्पर एक दूसरे में निवास करते हैं, वैसे ही उसके शिष्य भी उनके साथ, पिता और पुत्र के साथ एकता में रहेंगे, ताकि संसार को यह विश्वास दिलाया जा सके कि यीशु को परमेश्वर ने भेजा था, पद 21। यीशु ने पहले ही पिता को महिमा दे दी है।

उसने पिता द्वारा दी गई महिमा को अपने शिष्यों को पहले ही दे दिया है ताकि वे एक हो सकें, पद 22। जैसे पिता यीशु में वास करते हैं, वैसे ही वे विश्वासियों में वास करेंगे ताकि कलीसिया में महान एकता पैदा हो। इसका परिणाम यह होगा कि उद्धार न पाए हुए लोग यह विश्वास करेंगे कि यीशु पापियों के लिए परमेश्वर के प्रेम के संदेश के साथ परमेश्वर की ओर से आए हैं, पद 23।

यीशु अपने प्रार्थना का समापन पिता से यह निवेदन करके करते हैं कि वह चुने हुएों को स्वर्ग में ले जाए ताकि वे यीशु की महिमा को देख सकें जो पिता ने सृष्टि के निर्माण से पहले उन्हें दी थी, पद 24। यद्यपि संसार पिता से अनभिज्ञ है, यीशु, जो अकेले पिता को जानते हैं, ने अपने शिष्यों को बताया कि यीशु पिता से आए हैं, पद 25। यीशु ने विश्वासियों को पिता को प्रकट किया और ऐसा करना जारी रखेंगे ताकि पिता का प्रेम उनके हृदयों में हो और यीशु उनके भीतर वास करें, पद 26।

यीशु की प्रार्थना हमें उनके चर्च के बारे में बहुत कुछ सिखाती है। चर्च की सभी चार विशेषताएँ, जो नाइसिन-कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन पंथ पर आधारित हैं, यहाँ पाई जाती हैं। यह एक पवित्र, कैथोलिक, सार्वभौमिक और प्रेरितिक चर्च है।

सबसे पहले, यह पिता से इसे एक बनाने के लिए यीशु की प्रार्थना का उत्तर है, आयत 11, 21 से 23। परिणामस्वरूप, यह वस्तुनिष्ठ है, और व्यक्तियों और कलीसियाओं को इसे व्यक्तिपरक बनाने के लिए काम करना चाहिए। दूसरा, कलीसिया पवित्र है क्योंकि यीशु, हमारे महान महायाजक ने कलवरी पर अपने पुरोहिती बलिदान के लिए खुद को समर्पित किया ताकि उसके लोग पवित्र बन जाएँ, आयत 17 से 19।

तीसरा, यह सार्वभौमिक है, जिसमें न केवल यीशु के शिष्य शामिल हैं, बल्कि वे सभी शामिल हैं जो उनकी गवाही के माध्यम से उस पर विश्वास करेंगे, पद 18 और 20। चौथा, कलीसिया प्रेरितिक है, पतरस से रोमन कैथोलिक उत्तराधिकार के कारण नहीं, बल्कि विश्वासियों के कारण जो प्रेरितिक सिद्धांत का प्रचार करते हैं, जिस पर कलीसिया की स्थापना हुई थी, पद 6 से 8, 14 और 20। इस परिच्छेद में ट्रिनिटी के पेरीकोरेसिस, या खतना, परिच्छेद, पारस्परिक निवास, 21 से 23 का रहस्यमय सत्य भी शामिल है, और इसका अद्भुत परिणाम यह है कि एक प्राणीगत तरीके से, छुटकारे के परिणामस्वरूप, परमेश्वर के नए नियम के लोग भी पिता और पुत्र में पारस्परिक रूप से निवास करते हैं, पद 21, 23, 26।

यूहन्ना 17 चर्च के बारे में बहुत कुछ सिखाता है, लेकिन इस सत्य से अधिक आश्चर्यजनक कुछ नहीं है कि परमेश्वर ने परमेश्वर के लोगों के जीवन में त्रिएकत्व के जीवन, प्रेम और एकता को पुनः प्रस्तुत करना उचित समझा है। चर्च को परमेश्वर से अनुग्रह माँगना चाहिए ताकि वह यीशु की महायाजकीय प्रार्थना के आश्चर्यजनक परिणामों का अनुभव कर सके। अंत में, परमेश्वर के नए नियम के लोग वे हैं जिन्हें सुसमाचार के साथ नियुक्त किया गया है, यूहन्ना 20:19 से 23।

हमने इसे पहले भी देखा है, इसलिए मैं यहाँ संक्षेप में बताऊँगा। यूहन्ना के सुसमाचार में, यीशु मृतकों में से जी उठने के बाद अपने शिष्यों के सामने तीन बार प्रकट होते हैं। वास्तव में, यूहन्ना हमारे लिए मायने रखता है।

उद्धरण: यह तीसरी बार था जब यीशु मृतकों में से जी उठने के बाद अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुए, 21:14. जब मरियम मगदलीनी ने पाया कि यीशु की कब्र से पत्थर लुढ़का हुआ है, तो वह दौड़ी और पतरस और यूहन्ना को बताया, जो कब्र पर दौड़े और उसे खाली पाया, अध्याय 21 से 10. तब यीशु मरियम के सामने प्रकट हुए और खुद को उसके सामने प्रकट किया।

यीशु ने उसे निर्देश दिया, "अपने भाइयों के पास जाओ और उनसे कहो कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता के पास, अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूँ, अध्याय 20, पद 17"। मरियम ने आज्ञा मानी और शिष्यों को घोषणा की, मैंने प्रभु को देखा है और यीशु का संदेश सुनाया, पद 18। यूहन्ना द्वारा दर्ज यीशु का पहला पुनरुत्थान दर्शन रविवार को हुआ जब शिष्य यहूदियों के उर से बंद दरवाजों के पीछे इकट्ठे हुए थे।

उद्धरण: यीशु आए, उनके बीच खड़े हुए और उनसे कहा, शांति तुम्हारे साथ हो। जब उसने उन्हें अपने हाथों और बाजू में निशान दिखाए, तो वे खुश हो गए। फिर से, यीशु ने कहा, शांति तुम्हारे साथ हो, एक आम अभिवादन जो अर्थ से भरा हुआ था क्योंकि उसने शिष्यों के डर और अपराधबोध को दृष्टि से बदल दिया।

फिर, यीशु ने शब्दों के साथ एक भविष्यवाणीपूर्ण कार्य को जोड़ दिया। जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ। यह कहने के बाद, उसने उन पर साँस फूँकी और कहा, पवित्र आत्मा ग्रहण करो।

यदि आप किसी के पापों को क्षमा करते हैं, तो उन्हें क्षमा कर दिया जाता है। यदि आप क्षमा नहीं करते हैं, तो उसे क्षमा नहीं किया जाता है। यहाँ यीशु ने आदम को जीवन की साँस देते हुए, उसे सजीव करते हुए, परमेश्वर द्वारा दी गई साँस को याद किया है, जिससे वह जीवित हो गया।

यहाँ, यीशु, अपने भविष्यसूचक कार्य में, शिष्यों पर साँस छोड़ते हैं। जीवन देने वाले यीशु, उन्हें पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व में ईश्वर की सहायता का वादा करते हैं ताकि वे दुनिया को जीवन देने वाला संदेश पहुँचाने के लिए इस्तेमाल किए जा सकें। इस प्रकार यूहन्ना के सुसमाचार में ईश्वर के लोग वे हैं जिन्हें यीशु ने पवित्र आत्मा की शक्ति और मार्गदर्शन में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए नियुक्त किया है, जिसके परिणामस्वरूप वे उन श्रोताओं पर क्षमा या उसकी कमी लाते हैं जो सत्य पर विश्वास करते हैं या उसे अस्वीकार करते हैं।

चर्च के बारे में जॉन का सुसमाचार वास्तव में प्रमुख और महत्वपूर्ण है और पहले श्रोताओं के साथ-साथ उन लोगों के लिए भी एक आशीर्वाद है जिन्होंने इसे युगों से सुना है।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 15 है, ईश्वर के लोग।